महान वह बनते हैं, जो अपनी सोच पर हाई टैक्स लगाते हैं

जीवन में सोच का बड़ा महत्व है। आप महान बनना चाहते हैं तो महान सोच आपके अन्दर होनी चाहिए। महानता की तस्वीर अपनी सोच में झलकनी चाहिए। सोच ही वह मटेरियल है जो आपको महान बना सकती है। बिना श्रेष्ठ विचार आप महान नहीं बन सकते। महान लोगों की ओर देखें तो पता चले, वो कैसे महान बने।

कुछेक महान बनने वाले-

व्यक्ति अपने विचारों का परिणाम होता है। जो वो सोचता है, वही बन जाता है - **महात्मा गांधी**

लोगों की सोच का छोटा-सा फर्क परिणाम में बहुत बडा फर्क पैदा कर देता है। वह फर्क है 'नज़रिये का फर्क'। - **डब्लयू कलेमेंट स्टोन**

यदि आप सोचते हैं कि आप अमुक कार्य कर सकते हैं तो आप सही हैं। यदि आप सोचते हैं कि नहीं कर सकते तो भी आप सही हैं - **हैनरी फोर्ड**

यह बेहद ज़रूरी है कि आप अच्छा सोचें। जब आप अच्छा सोचते हैं तो वे तरंगे ब्रह्माण्ड में फैलती हैं और इच्छित चीज़ों को अपनी ओर खिंचती हैं। - **डॉ. जॉय विटाल**

सिर्फ सोच ही इतनी शक्तिशाली होती है, जो सही और गलत में भेद कर सकती है, जो व्यक्ति को ऊपर उठा सकती है और नीचे गिरा सकती है। - **जार्ज मरे**

आपको हमारे साथ यकीन करना होगा कि संसार की महान हस्तियां यदि सोच को इतना ताकतवर मानती हैं, तो वो सत्य ही होगा। यदि यह सत्य है तो हर विचार बेशकीमती है। इस दुनिया की रीत के अनुसार हर बेशकीमती चीज़ सोच समझ कर खर्च की जाती है, तो विचारों को इंसान इतने हल्के में क्यों लेता है? यदि विचारों में इतनी शक्ति है तो हर बार सोचने के पूर्व मन में प्रश्न आना चाहिए कि यह विचार जीवन को संवारेगा या बिगाड़ेगा?

अवचेतन मस्तिष्क के विशेषज्ञ कहते हैं कि जो आप लगातार सोचते हैं, पूरे समर्पण से सोचते हैं, पूरी शक्ति से सोचते हैं वैसे ही परिणामों को आप अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यदि यह सत्य है तो क्या इन हर विचार को जीवन में स्थान देने के पूर्व आप सोचते हैं कि आप वैसे परिणाम पाना चाहते हैं कि नहीं। यदि सोच इतनी ताकतवर है तो हमें उस पर गौर करना चाहिए। यदि सोच वाकई इतनी शक्तिशाली है, यदि सोचा हुआ हकीकत बन सकता है, सोचने में पैसा नहीं लगता, यदि सोच जीवन को सुखमय और समृद्ध बना सकती है, तो दुनिया का हर इंसान हमेशा वह क्यों नहीं सोचता 'जो वह पाना चाहता है'।

यदि ऊपर वाले की, दुनिया बनाने वाली कमेटी का मैं हिस्सा होता तो विचारों पर निश्चित रूप से टैक्स लगा देता। हर इंसान को विचार करने की कीमत देनी होती है। हर अच्छे विचार पर आपके अकाउंट से कुछ धन निकल जाता है और हर बुरे विचार पर भी।

अगर ऐसा होता तो हम यकीन के साथ कहते हैं कि दुनिया उसके बाद ज़्यादा खुशगवांर होती। हर इंसान योजना बनाकर सोचता और सिर्फ श्रेष्ठ सोचता।

हर व्यक्ति जलन, हीनता, निराशा, ह ताशा,

नकारात्मकता आदि के विचारों से दूर रहता। क्योंकि इन अनुत्पादक विचारों पर शुल्क लगता। धीरे-धीरे इंसान सोचता कि यदि पैसा खर्च करना ही है तो बुरा सोचने में क्यों करें।

हमारा कहने का मतलब है यदि आप मानसिक रूप से सामान्य हैं तो ये सम्भव नहीं है कि आपको अच्छे और बुरे विचारों में फर्क मालूम न हो। सभी हीन विचार और श्रेष्ठ विचारों में फर्क जानते हैं। समृद्धि और गरीबी के विचारों में फर्क जानते हैं। मुश्किल यह है कि हम अपने विचारों पर ध्यान नहीं देते। यदि हम जानते भी हैं कि कहाँ गलती कर रहे हैं, तो भी हम उस सच का सामना नहीं करना चाहते। क्योंकि हम विचारों पर नियंत्रण नहीं रखते, इसीलिए अनचाहे विचार भी हमें घेर कर प्रभावित कर देते हैं।

हमारा अनुभव कहता है कि इंसान को घटिया और संकुचित सोच की कीमत आज भी चुकानी पड़ती है। भले ही अकाउंट से तुरन्त पैसे नहीं निकलते हों, लेकिन नकारात्मक सोच से जीवन से सुख और समृद्धि का अकाउंट कम होता चला जाता है। हम कारणों को सीधा समझ नहीं पाते, लेकिन उसका मूल कारण हमारी सोच होती है।

आप महानता के शिखर पर पहुंचना चाहते हैं तो आपको अपनी सोच पर अवश्य ध्यान देना ही होगा। जब हम अपनी सोच पर ध्यान देते हैं तो पता चलता है अधिकांश हम किन विचारों के घेरे में होते हैं।

जो मुद्दे आपके नियंत्रण से बाहर हैं, उनकी चिंता से मुक्त हो जाइए और जो मुद्दे आपके नियंत्रण में है, उनकी चिंता की बजाए समाधान पर कार्य कीजिए। आप अपनी सोच को इस तरह से देखें और अपने आपसे प्रश्न करें -

प्रश्न : आप दिन का ज़्यादातर समय नकारात्मक विचारों के साथ बिताते हैं अथवा सकारात्मक विचारों के साथ?

उत्तर : अधिकांश का उत्तर होगा, नकारात्मक विचारों की प्रतिशत ज़्यादा है।

प्रश्न : नकारात्मक विचारों में से कौन से विचार बार-बार आते हैं?

उत्तर : अधिकांश लोगों का उत्तर होता है - बीमारी का भय, किसी भी कारण से अपमान का भय, नुकसान का भय, दूसरे की समृद्धि से जलन, दुर्घटना का भय, बच्चों के भविष्य की चिंता, उचित मान-सम्मान ना मिलने का दुःख, मृत्यु का भय, आप जितना अन्य लोगों के लिए करते हैं, उतना यश ना मिलने का दुःख।

अगर हम देखें तो मुख्य रूप से संसार में चिंता और तनाव के दो प्रमुख कारण हैं - 1. बीते हुए कल से जुड़ी हुई घटनायें, जिन्हें बदला नहीं जा सकता। 2. आने वाले भविष्य से जुड़ी अनजानी आशंकायें और डर।

हम सभी मानते हैं कि बीते कल को बदला नहीं जा सकता, उससे सिर्फ सीख ली जा सकती है। लेकिन फिर भी बीता हुआ कल सताता है। सबकी इच्छा रहती है कि किस तरह भूत और भविष्य के तनाव से मुक्त हो सकें। हम आपको बताना चाहते हैं कि उसके लिए औसत सोच वाले इंसान की जगह क्यों ना हम श्रेष्ठ विचार में बदल लें।

ऐसा निर्णय लें जिससे शक्ति पैदा हो। क्या ऐसा करें, जिससे हमारा व्यक्तित्व और कार्य दुनिया वालों को हमारे जाने के बाद भी याद रहे। इस तरह अपने आपको, अपनी सोच पर गौर करके देखें तो पता चलेगा कि हमारे अन्दर कौन सी कैटेगरी के मटेरियल हम डाल रहे हैं और सोच के रूप में उसे उगार रहे हैं। यदि हम महान बनना चाहते हैं तो सोच रूपी मटेरियल हाई क्वालिटी का होना ज़रुरी है। अन्यथा हमें उसकी कीमत चुकानी ही पड़ेगी। आप सभी अपने आपको महान बनाने की दिशा में अग्रसर हैं ना! तो आप अपनी ही शक्ति को उत्कृष्ट बनायें, बनायेंगे ना!

भाग्य हमारे हाथों की लकीरों में नहीं, हमारे कर्मों में है

ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

जीवन में क्या कभी-कभी ऐसा कुछ होता है कि सोचा था कुछ और, और हो गया कुछ और। बहुत कम ऐसा होगा कि जो स्क्रिप्ट हम लिखते हैं, जो प्लैन हम बनाते हैं बिल्कुल वैसा ही होगा। बचपन से हमने सीखा कि जो कुछ भी हमारे जीवन में हो रहा है वो परमात्मा की मर्ज़ी से हो रहा है। पत्ता भी जो हिलता है तो वो ईश्वर की मर्ज़ी से हिलता है। एक मिनट के लिए सोचते हैं, अगर ये पूरी दुनिया भगवान की मर्ज़ी से चल रही होती, अगर हम सबका भाग्य परमात्मा लिख रहा होता, अगर इस सृष्टि का भाग्य परमात्मा लिख रहा होता तो एक वर्ड में सोचो कि ये दुनिया कैसी होती! भगवान भी क्या अगर ये दुनिया हम में से भी किसी की मर्ज़ी से चल रही होती तो आपमें से कोई लिखता कि भूकंप आये और इतनी आत्माओं के भाग्य में दुःख लिखकर चला जाये। लिखता हम में से कोई ऐसा? नहीं। अगर आप अपने बच्चे का भाग्य लिखें तो कैसा भाग्य लिखेंगे? 2 मिनट सोचना भी नहीं पड़ता। लिखते जायेंगे...रिश्ता कैसा होगा, परफेक्ट। उसकी फैमिली कैसी होगी, परफेक्ट। उसका करियर कैसा होगा, परफेक्ट। परफेक्ट से कुछ नीचे लिख ही नहीं सकते हम। अगर हमारे दो-तीन बच्चे हैं एक बहुत आज्ञाकारी है और एक थोड़ा मस्ती वाला है, नटखट है। आप दोनों का भाग्य लिखेंगे तो कैसा लिखेंगे? एक का थोड़ा ज़्यादा परफेक्ट, और एक का थोड़ा कम, कैसा लिखेंगे? इक्वल। और अब परमात्मा भी तो हमारा बाप है अगर परमात्मा हमारा भाग्य लिखेगा तो कैसा लिखेगा? परफेक्ट लिखेगा और इक्वल लिखेगा। एक और बात बचपन से सुनी थी कि जैसा कर्म वैसा फल। दो कांसेप्ट हैं एक, जो कुछ हो रहा है वो परमात्मा की मर्ज़ी से हो रहा है, दूसरा, जो कुछ हो रहा है वो मेरे कर्मों का फल है। दोनों में से चेक करना है। कौन सा राइट है और कौन सा रॉन्ग। कर्म हमारे आज परफेक्ट नहीं हैं। कुछ कर्म हमारे बहुत श्रेष्ठ हैं और कुछ कर्म हमारे एवरेज हैं। हमारे कर्म इक्वल नहीं हैं इसीलिए फिर हमारा भाग्य भी इक्वल नहीं है। अब अगली बार जब भी कुछ होगा और मन कहेगा मेरे साथ ऐसा क्यों? तो अगुंली ऊपर नहीं जानी है, अगुंली कहाँ जानी है? अपनी तरफ। हम कोई ऐसा कर्म ना करें जो मेरे कर्म से दूसरे का माइंड डिस्टर्ब हो। अगर मेरे कर्म से दूसरे का माइंड डिस्टर्ब हुआ तो मेरा माइंड शांत रहना सम्भव नहीं। अगर मैंने दूसरे को डिस्टर्ब किया तो जैसा कर्म वैसा फल। क्योंकि वैसी ही एनर्जी हमारे पास वापिस आती है। और वही फिर भाग्य में लिखा जाता है। तो ये हमेशा ध्यान में रखना है कि अब अगर इस भाग्य में कुछ चेंज करना है, कुछ ठीक करना है तो अगुंली किसके पास जानी है? अपनी तरफ। क्योंकि कर्म लिखने वाला कोई और नहीं है, हम ही हमारे कर्मों द्वारा अपना भाग्य लिखते हैं।

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये,
आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।